

विचार

दैनिक जागरण

तन और मन के तालमेल से ही सुखद जीवन संभव है

नई सरकार का एजेंडा

संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने एक तरह से मोदी सरकार का अगले पांच साल का वह एजेंडा ही पेश किया जिसकी झलक भाजपा के घोषणा पत्र में भी दिखी थी और चुनाव नतीजों के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विभिन्न भाषणों में भी। नई लोकसभा के गठन के उपरांत संसद के संयुक्त सत्र में राष्ट्रपति के अभिभाषण का महत्व इसलिए होता है, क्योंकि उसमें सरकार एक तरह से अपनी भावी नीतियों और कार्यक्रमों को रेखांकित करती है। राष्ट्रपति के अभिभाषण में जिस तरह यह उल्लेख किया गया कि मोदी सरकार सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के सिद्धांत पर चलेगी उससे यह स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री उस वातावरण को खत्म करने के लिए संकल्पित है जो विरोधी दलों की ओर से एक अर्र से बनाया जा रहा है। शायद इसीलिए राष्ट्रपति के अभिभाषण में यह भी कहा गया कि मोदी सरकार के नेतृत्व में नया भारत रवींद्र नाथ टैगोर के दर्शन पर आगे बढ़ेगा, जहां हर कोई बिना डरे जीवन यापन करने में सक्षम हो। इसी बात को तब और स्पष्ट किया गया जब कहा गया कि सरकार का उद्देश्य लोगों का जीवन सुविधायुक्त और बंधनमुक्त बनाना है। राष्ट्रपति का अभिभाषण यह भी रेखांकित करता है कि मोदी सरकार को देश की मौजूदा समस्याओं और साथ ही आने वाली चुनौतियों का भी अच्छी तरह भान है। इसीलिए एक ओर जहां ग्रामीण भारत को मजबूत बनाने पर जोर दिया गया वहीं दूसरी ओर युवाओं और महिलाओं की अपेक्षाओं को पूरा करने की बात की गई। वास्तव में सबकी अपेक्षाएं पूरी होने से ही नए भारत का सपना सही तरह से साकार होते हुए दिखेगा।

यह अच्छा है कि सत्ता संभालते ही कुछ ऐसे निर्णय लिए गए जो इसकी पुष्टि करते हैं कि मोदी सरकार अपनी दूसरी पारी में वांछित नतीजे देने पर ध्यान केंद्रित करने वाली है। इसका संकेत इससे मिल रहा है कि सरकार के पांच साल के एजेंडे को रेखांकित करने के साथ ही मंत्रियों को योी दिन के अपने एजेंडे पर विशेष ध्यान देने को भी कहा जा रहा है। समस्याओं और चुनौतियों से परा पाने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित करना समय की मांग भी है और जरूरत भी, क्योंकि भाजपा के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को जो प्रचंड बहुमत मिला वह इसी बात का परिचायक है कि मोदी सरकार से लोगों की अपेक्षाएं बढ़ गई हैं। आम जनता अछूरे कार्यों की पूरा होते और साथ ही उन समस्याओं का समाधान होते हुए भी देखना चाहेगी जिनका वादा किया गया है। उचित यह होगा कि राष्ट्रपति के अभिभाषण पर संसद के दोनों सदनों में सार्थक चर्चा हो। वास्तव में यही वह उपाय है जिससे विपक्ष सत्तापक्ष को उन मसलों पर गौर करने के लिए राजी कर सकता है जो उसकी समझ से सरकार की प्राथमिकता में होने चाहिए। विपक्ष को प्रधानमंत्री के इस आश्वासन पर भरोसा करना ही चाहिए कि उसकी बातों को अहमियत दी जाएगी। वैसे तो राष्ट्रपति के अभिभाषण में तमाम मसलों को समाहित किया गया है, लेकिन उचित यह होता कि पुलिस और न्यायपालिका में सुधार भी मोदी सरकार की प्राथमिकता सूची में शीर्ष पर दिखते।

सराहनीय पहल

उत्तराखंड में स्थित विश्व प्रसिद्ध कार्बेट नेशनल पार्क में वीआइपी रज समान हो गया है। इस सिलसिले में पार्क प्रशासन की ओर से किए गए आदेश को केंद्र सरकार की उस पहल के असर के तौर पर देखा जा रहा है, जिसमें वीआइपी कल्चर पर करारी चोट की गई है। कार्बेट नेशनल पार्क में सफारी और वहां ठहरने के लिए जिस प्रकार से संस्कारों तंत्र से लेकर सियासतदां का दबाव पार्क के नुमाइंदों पर बढ रहा था, उसे दूर करने की दिशा में यह पहल सराहनीय मानी जा सकती है। अब असली चुनौती इस आदेश के कड़ाई से अनुपालन की है। असल में देश के सबसे पुराने राष्ट्रीय उद्यानों में से एक कार्बेट नेशनल पार्क पर सैलानियों का खासा दबाव है। उस पर रही-सही कसर वीआइपी के दौंगों से पूरी हो रही थी। हो यह रहा था कि सरकारी मुलाजिमों से लेकर राजनीतिज्ञों की तरफ से अक्सर पार्क में सफारी के साथ ही वहां वन विश्राम गृहों में ठहरने समेत अन्य व्यवस्थाओं की मांग की जा रही थी। न सिर्फ अपने लिए, बल्कि नाते-रिश्तेदारों तक की व्यवस्था के लिए पार्क प्रशासन से निरंतर पत्राचार हो रहा था। कई मंत्रबा तो पार्क अधिकारियों पर ऊंची पहुंच और हनक दिखाने से भी गुरेज नहीं हो रहा था। ऐसे में पार्क प्रशासन की पेशानी पर बल पड़े थें। वीआइपी के आने पर पार्क के कार्मिकों को उनकी आवभगत में जुटना पड़ रहा था, जबकि इसका सरकारी कार्य से कोई बात्ता नहीं है। पार्क के कार्मिकों का असली दायित्व तो वासस्थल विकास और सुखा का है। इस सबको देखते हुए अब पार्क प्रशासन ने वीआइपी रज की समाप्ति करते हुए राज्य सरकार की राज्य अतिथि नियमावली के तहत ही काम करने की टानी है। इसके तहत राज्य अतिथियों की सूची-एक में शामिल संवैधानिक पदों पर आसानी चुनिंदा लोगों को छोड़ अन्य किसी को भी वीआइपी ट्रीटमेंट न देने के आदेश निर्गत किए गए हैं। अब सूची-एक को छोड़ किसी अधिकारी अथवा महानुभाव के लिए कार्बेट में सफारी व ठहरने की व्यवस्था को लेकर कोई पत्राचार होता है तो ऐसे पत्र तुरंत लौटाए जाएंगे।

कचरे को बनाएं फायदे का सौदा

मिताली जैन

बोते कुछ समय से देश में औद्योगीकरण की तेज ब्यार अपने साथ कुछ समस्याएं भी साथ लाई है। इन समस्याओं को सूची में सबसे ऊपर है प्रदूषण। दरअसल उद्योग प्राकृतिक संपदा का बेतहशा दोहन कर रहे हैं इससे असंतुलन के साथ ही कचरे भी पैदा हो रहा है। इसका उचित निपटान नहीं हो पा रहा है। इससे मानव जीवन और पर्यावरण पर संकट गहराने लगा है। राजधानी दिल्ली तो औद्योगिक कचरे का डंप यार्ड बनती जा रही है। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट यानी सीएसई द्वारा जारी एक रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली में तकरीबन 113600 ऐसी औद्योगिक इकाइयां हैं जिनसे सालाना 419736 मिलियन टच कचरा निकलता है। मगर इसका न तो सही निस्तारण किया जाता है और न ही इसके रिसाइकिल की कोई व्यवस्था है। इसी तरह दिल्ली में ठोस कचरे का भी बमुरिकल 55 फीसद ही निपटान हो रहा है। शेष 45 फीसद भलत्था, गाजीपुर व ओखला लैंडफिल साइट पर डंप किया जा रहा है।

यह औद्योगिक कचरा मिट्टी, पानी और हवा तौनों को प्रदूषित कर रहा है। इसका एक उदाहरण

कचरे का सही प्रबंधन कई तरह के लाभ दिला सकता है। इससे हवा, पानी और मिट्टी की हालत भी सुधरेगी

यमुना का प्रदूषित पानी है। यह नदी इस कदर मैली हो चुकी है कि सरकारों द्वारा करोड़ों-अरबों रुपये खर्च करने के बाद भी हालात जस के तस बने हुए हैं। औद्योगिक कचरे का निपटान करने के लिए लोहे और प्लास्टिक के अलावा धातुओं का कबाड़, पुराने बैटरियों और बेकार हर्ड मशीनों को गलाया जा रहा है जिससे वायु प्रदूषण के अलावा मिट्टी में भी जहरीले रसायन समा रहे हैं।

कचरे का निपटान सही तरह से किया जाए तो यह फायदे का सौदा भी बन सकता है। यह बिजली और जैविक खाद का बेहतरीन स्रोत साबित हो सकता है। साथ ही इससे देश को प्रदूषण मुक्त करने के प्रयासों में होने वाले खर्च को भी कम किया जा सकता है। देश में विकास, तभी सार्थक होगा जब देश स्वस्थ और खुशहाल हो। बीमार देश या प्रदूषित वातावरण के बदले औद्योगिक विकास के कोई मायने नहीं है।


सुरेंद्र किशोर

यदि कांग्रेस में जिम्मेदारी की भावना विकसित नहीं हुई तो अगले चुनाव में भाजपा और अधिक सीटें पा सकती है

म न का दाग मिटाने की जगह सिर्फ कावापलट की कोशिश से कांग्रेस का कोई कल्याण होता नजर नहीं आ रहा है। 2014 के लोकसभा चुनाव के बाद एंटीनी कमेट्री ने कांग्रेस आलाकमान को एक तरह से ‘आत्मा की बैटरी चार्ज करने’ की सलाह दी थी। मगर पिछले पांच वर्षों में आलाकमान ने उस पर कोई ध्यान ही नहीं दिया। हलिया आम चुनाव में हार के बाद भी पार्टी पर कोई फर्क नहीं पड़ा। आज भी कांग्रेस यह समझ रही है कि पार्टी के शीर्ष पर रहलु गांधी के अलावा किसी अन्य को बैठा देने और कार्यकर्ताओं को उनकी तथाकथित अकर्मण्यता के लिए फ्टकार लगाने से काम चल जाएगा। इससे कांग्रेस का काम नहीं चलेगा। मुद्यों के ईंधन के बिना वंशवाद की गाड़ी भी अधिक दिनों तक नहीं चल सकती। कांग्रेस 1984 के बाद कभी लोकसभा में पूर्ण बहुमत नहीं पा सकी तो आलाकमान को इसके कारण तलाशने होंगे, परंतु क्या पार्टी ने अपने भीतर कभी झांकने का प्रयास किया ? क्या पार्टी के सलाहकारों ने कभी आलाकमान को यह सलाह देने की हिम्मत जुटाई। शायद नहीं। वहीं अधिकांश राजनीतिक पंडित कांग्रेस की लगातार गिरती सेहत के असली कारणों को नहीं समझ पा रहे हैं। एक एंटीनी को इसकी समझ जरूर रही है। यहि खुली छूट के साथ उन्हें नेतृत्व सौंपा जाता तो फर्क पड़ सकता था, पर संभवतः उन्हें भी लगता है कि परिवार के आधार पर चल रही पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से उन्हें वैसी छूट नहीं मिलेगी, क्योंकि दाम चहेरे पर हैं, लेकिन नेतृत्व आईना साफ करने में

जुटा है। कहा जा रहा है कि स्वास्थ्य कारणों से एंटीनी ने रहलु गांधी के स्थान पर अध्यक्ष पद संभालने में अपनी असमर्थता प्रकट की, मगर यह भी संभव है कि उन्होंने सोचा हो कि जब पार्टी की नीतियां हमारे हाथिब से नहीं चलेगी तो पार्टी के नेतृत्व पर कोई असर नहीं पड़ने वाला। पांच साल पहले अपनी रिपोर्ट में एंटीनी ने स्पष्ट रूप से कहा था कि पार्टी की हार इस धारणा की वजह से हुई जिसमें लोगों को लगता है कि कांग्रेस का झुकाव अल्पसंख्यकों की ओर है। इसीलिए बहुसंख्यकों का झुकाव भाजपा की ओर हुआ। एंटीनी के अनुसार भ्रष्टाचार, मुद्रास्फीति और अनुशासनहीनता हार के अन्य कारण थे। जब कांग्रेस आलाकमान ने एंटीनी की सलाह पर ध्यान तक नहीं दिया तो सवाल उठता है कि कांग्रेस के कायाकल्प की कितनी गुंजाइश बची हुई है ?

कम से कम दो अवसरों पर कांग्रेस नेतृत्व ने मुद्यों के जरिये पार्टी को चुनावी सफलता के शीर्ष पर पहुंचा दिया था। ये मुद्दे बाद में नकली साबित हुए, परंतु तात्कालिक तौर पर उन्होंने अपना असर जरूर दिखाया। 1969 में कांग्रेस में हुए विभाजन के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की सरकार अल्पमत में आ गई थी। वह कम्युनिस्ट पार्टियों और द्रष्टक की मदद से सरकार चला रही थी। इंदिरा गांधी और उनके नेतृत्व वाली कांग्रेस का भविष्य अनिश्चित हो चुका था, लेकिन इंदिरा गांधी ने साहस के साथ ‘गरीबी हटाओ’ का नारा दिया। उनकी सरकार ने 14 निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर यह धारणा बनाई कि निजी बैंक गरीबी हटाने की राह में बाधक हैं, क्योंकि

योग का उपयोग बढ़ाने की जरूरत

आज यदि भारत के साथ दुनिया के तमाम देशों में योग की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है तो इसीलिए कि योग संपूर्ण स्वास्थ्य की सीमात देने वाली प्रक्रिया है। यह केवल शारीरिक व्यायाम भर नहीं, बल्कि एक ऐसी स्वस्थ जीवनशैली है जो मन का स्वास्थ्य भी संभारती है। योग के अलावा स्तर में ऐसा कोई व्यायाम नहीं जो इंसान को आत्मिक स्तर पर भी परिष्कृत करता हो। हमारे देश में शुरू से ही योग को एक आध्यात्मिक प्रक्रिया माना गया है। जो शरीर, मन और आत्मा को जोड़ते हुए सकारात्मक सोच और स्वस्थ जीवन की राह सुझाती है। मौजूदा समय में न केवल मानसिक रोगियों के बढ़ते आंकड़े, बल्कि आमजन में भी जिस तरह आक्रामकता और विचार एवं व्यवहार में ठहराव की कमी अपनी पैठ बना रही है उसे देखते हुए योग को अपनाने की जरकार है। बोते कुछ बरसों में भारत में ही नहीं दुनियाभर में योग करने वालों की संख्या तेजी से बढ़ी है और इसका एक कारण संयुक्त राष्ट्र की ओर से 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित करना और दूसरा, दुनिया भर में यह धारणा पुख्ता होना है कि आज के प्रतिस्पर्धी और तनाव भरे जीवन में योग शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी उपयोगी है।

योग दिवस को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने की शुरुआत 21 जून, 2015 से हुई, लेकिन यह भारतीय संस्कृति और संस्कारों का सदा से ही हिस्सा रहा है। इसके जरिये सकारात्मक जीवनशैली को सबसे ऊपर रखा गया। योग भारत का एक बड़ा आविष्कार है। यह संपूर्ण मानतात के लिए है। स्वास्थ्य सहेजने की इस कला को दुनिया के हर हिस्से में बसे लोगों ने अपनाया है। सुखद यह है कि अब पूरी दुनिया में इसे खास दिन को योग के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए मनाया जाता है, लेकिन आवश्यक केवल यह नहीं है कि योग दिवस पर योग की महत्ता से परिचित हुआ जाए, बल्कि यह भी है कि उसे दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाया जाए। आज की आभाधापी भरी जीवन शैली में योग तनाव से जूझने और सहज रहने की शक्ति देता है, जो कि मन-मस्तिष्क के स्वास्थ्य को सहेजने के लिए बेहद आवश्यक है। एक ओर आधुनिक जीवनशैली और खानपान शारीरिक स्वास्थ्य को हानि पहुंचा रहे हैं तो दूसरी ओर काम दबाव और घर से दफतर तक अनगिनत उलझनों से जुझता इंसानी मन बीमार हो रहा है।

यह स्थिति वाकई चिंतनीय है, क्योंकि नागरिकों की मानसिक सेहत सामाजिक जीवन की बेहतरी से जुड़ा अहम पहलू है। आमजन की सोच की स्थिरता और सकारात्मकता समाज में सुरक्षित और सहज परिवेश बनाने के लिए जिम्मेदार होती है। कहना गलत नहीं होगा कि चाहे खुद को



डॉ. मोनिका शर्मा



बेहतर ढंग से समझने की बात हो या घर-दफतर और सड़क पर सामने आने वाली आम सी परिस्थितियों को संभालने का मामला, मन का सहज रहना जरूरी है। नियमित योगाभ्यास से यह सहजता पाई जा सकती है। यही वजह है कि योग को शरीर को निरोगी और मन को कुदरती तरीके से समृद्ध करने की कला माना जाता है। चिकित्सक से लेकर योग प्रशिक्षक तक सभी यह मानने लगे हैं कि मन का शांत और स्वस्थ होना जीवन के हर क्षेत्र में बेहतरी का आधार बन सकता है। इ्यूक यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन के मुताबिक ध्यान से उप आसन, दोनों ही रूपों में योग का मानसिक समस्याओं पर बेहद सकारात्मक प्रभाव होता है। इस शोध के अनुसार मानसिक सेहत के लिए सप्ताह में कम से कम तीन बार, 30 मिनट तक योग करना चाहिए। कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी का एक अध्ययन बताता है कि योग तनाव से जुड़े हार्मोन के स्तर को घटाना है। ऐसे शोध और अध्ययन योग को लोकप्रिय बनाने में सहायक बनने के साथ उसकी उपयोगिता को प्रमाणित करने का काम कर रहे हैं।

हमारे समाज और परिवारों में आए दिन हो रही घटनाएं



अवधेश राजपूत

वे गरीबों को कर्ज नहीं देते। इसके साथ ही उन्होंने राजाओं के प्रिवीपर्स और विशेषाधिकार खत्म किए। कालांतर में ये कदम लाभकारी नहीं रहे, लेकिन तब गरीबों को वही लगा कि इंदिरा गांधी हमारे लिए काम कर रही हैं। नतीजतन 1971 के लोकसभा चुनाव और 1972 के विधानसभा चुनावों में इंदिरा कांग्रेस ने भारी सफलता हासिल की जबकि मूल कांग्रेस के अधिकांश दिग्गज पुराने धड़े में ही बने हुए थे। तब मुद्यों के दम पर ही इंदिरा गांधी ने मैदान फतह किया था। आज जब मुद्दे नहीं हैं तो प्रिंगका गांधी चुनावी हार के लिए कार्यकर्ताओं को फ्टकार रही है।

संजय गांधी के निधन के बाद जब राजीव गांधी को पार्टी का महासचिव बनाया गया तो उनकी छवि ‘मिस्टर क्लीन’ की थी। उनकी पहल पर ही देश के तीन विवादस्पद कोंग्रेसी मुख्यमंत्रियों को हटाया गया। इंदिरा की हत्या से उपजी सहननुभूति के साथ-साथ राजीव गांधी की स्वच्छ छवि भी 1984 में कांग्रेस की अभूतपूर्व जीत का कारण बनी। आज कांग्रेस के शीर्ष परिवार के साथ-साथ अनेक बड़े

बताती है कि अब सेर्य और ठहराव नहीं बचा है। रिशतों को संभालने की बात हो या रीत रहे मन के चलते खुद बीमार होने का मसला, श्लोक आवेश में किसी की जान ले लेने से लेकर कामुक वृत्तियों के चलते शोषण की घटनाएं अब आम हैं। आज की अनिर्णयत जीवनशैली और भागमभाग भी जिंदगी बहुत कुछ छीन रही है। इस भागदौड़ में जीवन अस्त-व्यस्त और मन दिशाहीन सा है। विशेषतः मानते हैं कि मन की शक्ति को सही दिशा न दी जाए तो 95 फीसद मानसिक शक्ति व्यर्थ चली जाती है। नकारात्मक विचार दिलो-दिमाग को घेरने लगते हैं। हमारा असुरक्षित और असहिष्णु होता परिवेश बताता है कि व्यावहारिक रूप से यही हो भी रहा है। इतना ही नहीं कम उम्र में ही लोग माइग्रेन, अस्थमा, मधुमेह, रक्तचाप और मोटापा जैसी कई गंभीर बीमारियों से जूझ रहे हैं। साथ ही मानसिक सेहत से जुड़ी परेशानियां जैसे अनिद्रा, भूलने की बीमारी, भय, शक, क्रोध और अवसाद जैसी व्वाधियां भी घेर रही हैं। ऐसे में योग बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी की सेहत सहेज सकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2020 तक भारत में अवसाद दूसरा सबसे बड़ा रोग होगा। पहले से ही स्वास्थ्य सेवाओं के जर्जर ढांचे से जूझ रहे देश में मानसिक रोगियों की इतनी संख्या का उपचार भी क्षमताओं से परे है। ऐसे में योग के जरिये इन आंकड़ों को बहुत हद तक कम किया जा सकता है। योग का एक अहम पक्ष यह भी है कि यह इंसान को प्रकृति से जोड़ता है। भौतिकवादी सोच के बजाय आत्मिक उन्नति का मार्ग सुझाता है। इस प्रक्रिया का पहला कदम ही प्रकृति से जुड़ते हुए सकारात्मक जीवनशैली अपनाना है। इसमें खान-पान से लेकर विचार और व्यवहार तक संतुलन और समन्वय बनाने की कोशिश की जाती है। योग संतुलित जीवनचर्या का आधार है और ऐसी जीवनचर्या अपनाना अपने आप में कई शारीरिक-मानसिक ही नहीं आत्मिक समस्याओं का भी हल है। मन की वृत्तियों को अनुशासित करके अपराध के आंकड़ों में कमी भी लाई जा सकती है। इतना ही नहीं योग के जरिये मानसिक आरोग्यता और मन का ठहराव हासिल करने की जीवनशैली देश के जन-संसाधन को सहेजने का भी माध्यम बन सकती है। योग को इस रूप में देखा जाना समय की मांग है कि इसे अपनाकर मन-मस्तिष्क का स्वास्थ्य ही नहीं, सामाजिक मूल्य भी सहेजे जा सकते हैं। सोच-समझ को सही दिशा देना आमजन की जिंदगी में ही नहीं समाज-परिवार और देश में भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

(लेखिका सामाजिक मामलों की विश्लेषक हैं)

response@jagran.com


ऊर्जा
आत्म-प्रेम

हम जीवन को दो तरह से सुंदर और सफल बनाते हैं। पहला दूसरों से प्रेम करके दूसरा स्वयं से प्रेम करके। मनुष्य का स्वयं से प्रेम उसकी वह मूल शक्ति होती है जिसके विस्तार से मानव परमात्मा से भी संबंध स्थापित करने में सफलता प्राप्त कर लेता है। व्यक्ति स्वयं से प्रेम उसी स्थिति में कर पाता है जब वह सांसारिक विचारों से मुक्त होकर ध्यान की अवस्था में जाना सीख जाता है। यह वह अवस्था है जो मानव आत्मा को शक्ति प्रदान करती है। यदि हम स्वयं से प्रेम नहीं करते है या स्वयं से प्रेम करने का हमें समय नहीं मिलता है तो हम समय-समय पर दुखी होते रहेंगे। स्वयं से प्रेम स्वयं की बात होती है यही जब दूसरे प्राणियों से किया जाता है तब यह दूसरी बात हो जाती है। दो प्रेमों को जब गहराई से अनुभव किया जाता है तब स्वाभाविक ढंग से व्यक्ति को ऊर्जा प्राप्त होने लगती है। सुखद जीवन के लिए इसकी ही आवश्यकता है। यही ऊर्जा विपरीत परिस्थितियों में मानव शक्ति को बरकरार रखती है, इसी से प्रेम को आसानी से दूसरों के प्रति विस्तारित करना आसान हो जाता है।

हम स्वयं से प्रेम उसी अवस्था में कर सकते हैं जब हम कुछ समय के लिए सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर ध्यान की अवस्था में जाए। यह प्रेम जब एक बार विकसित हो जाता है तब अभूतपूर्व ढंग से ऊर्जा प्राप्त होने लगती है जो स्वयं से प्रेम बढ़ाने में मददगार साबित होती है। अपने स्वयं से प्रेम बढ जाता है, तब संपूर्ण प्रकृति से प्रेम उपन आ ही स्थापित होने लगता है जो मनुष्य को अतिरिक्त ऊर्जा उपलब्ध कराने लगता है। जीवन के दो ही उद्देश्य होते हैं। पहला यह कि दूसरा उसके स्वयं के साथ संबंध स्थापित होना तथा दूसरा संपूर्ण जगत से संबंध जो दूसरों के प्रति प्रेम को विकसित करके ही संभव होता है। जब यह एक बार विकसित हो जाता है, तब संपूर्ण जगत के समस्त प्राणि अपने समान ही प्रतिभ होने लगते हैं। जगत के साथ यदि हम प्रेम पूर्ण संबंध बनाने में असफल रहेंगे तो स्वयं से भी संबंध बनाने में हम असफल ही रहेंगे। जो बाहरी जगत से प्रेम का संबंध स्थापित करने में सफल हो जाते हैं, वे स्वयं से भी संबंध बनाने में सफल हो सकते हैं। दोनों ही बातों को एक साथ जीवन में गहराई से उतारना सफल जीवन जीने की संभावना के प्रतिशतों को बढ़ा देता है।

वीके जायसवाल

एक साथ चुनाव

दैनिक जागरण के 20 जून के अंक में प्रकाशित संपादकीय, व्यर्थ का बहिष्कार, पढ़ा। देश में एक साथ चुनाव निःसंदेह सबके लिए लाभप्रद है। वर्तमान में देश में दो चार महीने ऐसे नहीं गुजरते, जब कहीं चुनाव का माहौल न हो। कभी लोकसभा चुनाव, कभी विधानसभा चुनाव, कभी नगर निगम चुनाव तो कभी उपचुनाव। देश के किसी एक या अधिक राज्यों में चुनाव का प्रभाव अन्यत्र भी पड़ता है। आचार संहिता लागू होने से महत्वपूर्ण कार्य स्थगित हो जाते हैं। एक साथ चुनाव होने से खर्च में काफी कमी आएगी। पुलिस व सुरक्षा एजेंसियों का आवागमन कम होगा। मतदाताओं को लुभाने वाली घोषणाएं कम होंगी। वचे हुए पैसे का सदुपयोग विकास कार्यों में हो सकेगा। दीर्घकालिक योजनाएं लागू करने में आसानी होगी और देश की अर्थ व्यवस्था सुदृढ़ होगी। अतः विपक्षी दलों को चाहिए कि राजनीतिक स्वार्थ से ऊपर उठकर इस दिशा में सकारात्मक रुख अपनाते हुए सरकार का साथ देकर देश हित का परिचय दें।

विनाद चुतुर्वेद, लोनी रोड, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्‍ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण, डी-210-211, सेक्टर-63, गोलडा ई-मेल : mailbox@jagran.com

^[1] संस्थापक-स्व. पूर्णचंद्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेंद्र मोहन, संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए- नो:128 श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,एकी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 गोलडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी *

^[2] दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721

^[3] * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एच.के अर्जुन उत्तरदायी। सम्पत्ति विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होगा।